प्रारंभिक बाल शिक्षा क्या, क्यों और कैसे?

पद्मा यादव*

सरकारी नीतियों और शोधकर्ताओं ने इस बात पर बल दिया है कि बाल केंद्रित पाठ्यक्रम का अनुसरण तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास का दृष्टिकोण अपनाने पर पूर्व प्राथमिक शिक्षा अधिक प्रभावशाली होगी। प्रारंभिक प्रशासकों, व्यवस्थापकों तथा शिक्षकों से संपर्क करने पर ज्ञात हुआ है कि प्रारंभिक बाल शिक्षा के उद्देश्यों तथा शिक्षण विधिओं के संबंध में लोगों के मन में बहुत-सी भ्रांतियाँ हैं। इस लेख में यह प्रयास किया गया है कि प्रारंभिक बाल शिक्षा के नियोजन एवं क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला जाए। लेख में प्रस्तुत सुझावों का प्रयोग एन.सी.ई.आर.टी. का प्रारंभिक शिक्षा विभाग कई वर्षों से कर रहा है।

भूमिका

प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा को प्राय: जन्म से आठ वर्ष तक की आयु की शिक्षा व देखभाल के रूप में जाना जाता है। इनमें निम्नलिखित वर्ग सम्मिलित हैं—

– 0-3 वय वर्ग के शिशु के लिए क्रेश एवं गृह उद्दीपन के माध्यम से शैशवकालीन उद्दीपन कार्यक्रम
– 3-6 वय वर्ग के बच्चों के लिए पूर्व विद्यालयी शिक्षा कार्यक्रम
– 6-8 वय वर्ग के बच्चों के लिए प्राथमिक कक्षाओं की शिक्षा का कार्यक्रम

प्रारंभिक बाल शिक्षा को तीन से लेकर छ: वय वर्ग के शिशु की शिक्षा तथा देखभाल के रूप में माना गया है। प्रारंभिक शैशवकाल में शिशु के शारीरिक तथा मानसिक विकास की गति सबसे तीव्र होती है अत: उसके महत्व को स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रारंभिक बाल शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। प्रारंभिक बाल शिक्षा को मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महत्वपूर्ण निवेश के रूप में, प्राथमिक शिक्षा के पोषक एवं सहायक के रूप में और अपवंचित वर्ग की कामकाजी महिलाओं के लिए सहायक सेवा के रूप में वर्णित किया गया है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा से संबंधित ज़्यादातर दस्तावेजों एवं नीतियों में बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए ऐसे व्यापक कार्यक्रमों की

* *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

संस्तुति की गयी है जिसमें स्वास्थ्य, पोषण तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा अथवा शैशवकालीन उद्दीपन के तत्व शामिल हों। नीति संबंधी ज़्यादातर दस्तावेज़ों में इस बात पर बल दिया गया है कि पूर्व विद्यालयी शिक्षा बाल केंद्रित तथा क्रिया प्रधान हो। इस स्तर पर औपचारिक शिक्षण विधियों के प्रयोग तथा पढ़ने-लिखने और गणित शिक्षण के विरूद्ध चेतावनी भी दी गयी है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम पर कुछ आधारभूत विचार

बच्चों का विकास परिपक्वता तथा अधिगम दोनों पर निर्भर है। उनको अधिक से अधिक पर्यावरणीय उद्दीपन देने पर भी वे तब तक ठीक से सीख नहीं सकते जब तक वे शारीरिक और मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार न हों। इसी प्रकार यदि आस-पास का पर्यावरण उनके सीखने के अवसरों को सीमित कर देता है तो वे अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। अत: प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में शिशु की परिपक्वता तथा अनुभव स्तर दोनों का ध्यान रखा जाता है।

बच्चों की आवश्यकताओं, रुचियों तथा क्षमताओं में भिन्नता होती है तथा उनका विकास अलग-अलग ढंग और गति से होता है। फिर भी विकास की प्रक्रिया का एक निश्चित क्रम होता है और हर व्यक्ति उस क्रम से गुज़रता है। उनके विकास में जो भिन्नता होती है उसके कई कारण हो सकते हैं जैसे — आनुवंशिक तत्व, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, ग्रामीण एवं शहरी परिस्थितियों की भिन्नता, शिक्षा के स्तर में भिन्नता अथवा शिक्षा का सुलभ न होना, रीति रिवाज, परंपराएँ आदि। ज़्यादातर देखा गया है कि शहरों में रहने वाले ढाई से पाँच वर्ष के बच्चों के विकास की गति ग्रामीण तथा व्यापारिक क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों के विकास की गति से तेज़ होती है। हालाँकि प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में शिशुओं की आयु के अनुसार उद्देश्यों और क्रियाकलाप की रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है, किंतु यह आवश्यक नहीं कि उनका अक्षरश: पालन किया जाये। शिशु की परिपक्वता तथा सीखने के स्तर को ही ध्यान में रखकर कार्यक्रम का निर्धारण करना चाहिए।

एक ही वय वर्ग के बच्चों में भी व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं। प्रत्येक शिशु के व्यक्तित्व की विशिष्टताओं तथा उसकी अपनी विशिष्ट शैली से सीखने के अधिकार को स्वीकार करना चाहिए। शिशु में अपने आस-पास के संसार को जानने की जिज्ञासा और प्रेरणा छिपी रहती है। उन्हें सीमित करने वाला पर्यावरण मिलने पर या भावानात्मक असुरक्षा और अनुचित दबाव के कारण यह प्रेरणा कुंठित हो सकती है।

जिस समय बच्चों में अन्त: क्रिया की प्रक्रिया चलती रहती है उस समय वे अधिक सीखते हैं। जब वे एक-दूसरे से, अपने बड़ों से या अपने पर्यावरण के विभिन्न तत्वों से अन्त: क्रिया करते हैं तब वे ज्ञानात्मक और सामाजिक दृष्टि से बहुत अधिक लाभान्वित होते हैं।

संप्रेषण क्षमता के विकास अर्थात् अपने विचारों को व्यक्त करने तथा दूसरों को समझने की क्षमता के विकास की दृष्टि से प्रारंभिक शैशवकाल बहुत महत्वपूर्ण है। जब बच्चे सक्रिय वार्तालाप करते हैं तब उनकी भाषा के सभी पक्षों का विकास होता है। यदि वे केवल मूक श्रोता बने रहेंगे तो ऐसा नहीं होगा।

बच्चों का विकास अपने पर्यावरण की सक्रिय खोज़ करने तथा उसका विविध प्रकार से प्रयोग करने से होता है, रटने से नहीं। इसलिए उनके सीखने का सबसे अच्छा साधन खेल एवं क्रियाएँ हैं।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में बच्चा कैसा होता है?

बच्चों के विकास की गति, उनकी प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं में व्यक्तिगत भिन्नता होती है। हर बच्चा विशिष्ट होता है इसलिए उसकी दूसरे बच्चों से तुलना नहीं की जा सकती और करनी भी नहीं चाहिए। प्रत्येक बच्चे को अपनी गति से सीखने के लिए प्रोत्सहित करना चाहिए तथा किसी क्रिया को करने के लिए उस पर दबाव नहीं डालना चाहिए।

प्रारंभिक बाल शिक्षा में आने वाले 3–6 वय वर्ग के बच्चों में कुछ सामान्य विशेषताएँ होती हैं —

- इन बच्चों में अहं अधिक होता है तथा इनमें आत्मकेंद्रित होने की प्रवृत्ति होती है और वह हर वस्तु को अपने ही दृष्टिकोण से देखते हैं। उदाहरण के लिए, यदि सभी बच्चों को यह निर्देश दिया जाए कि वे आँख मूँद कर बैठें तो यह पाया गया है कि हमेशा कोई न कोई बच्चा बोल पड़ता है कि अमुक बच्चा देख रहा है। वह यह भूल जाता है कि इससे यह भी पता चलता है कि वह स्वयं भी देख रहा है। इस उम्र में बच्चे अपने विचारों तथा उन्हें व्यक्त करने के ढंग को दूसरों की पसंद को ध्यान में रखकर बदल नहीं पाते। इस वय वर्ग के बच्चे कहानी सुनने पर असंबद्ध विषय पर टिप्पणी करते हैं।
- उनमें विवेक तथा अप्रत्यक्ष चिंतन शक्ति विकसित नहीं होती। अत: वे प्रत्यक्ष वस्तुओं और अनुभवों से ही सीखते हैं। इसीलिए वे क्रिया तथा खेल के माध्यम से ही सबसे अच्छी तरह सीख पाते हैं।
- उनका ध्यान एकाग्र करने का समय छोटा होता है अर्थात् वे किसी एक क्रिया पर अधिक समय तक ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते और अधिक समय तक एक ही क्रिया को नहीं कर पाते। वे 7 से 15 मिनट तक ही अपना ध्यान केंद्रित कर पाते हैं और वह भी उन क्रियाओं में जिनमें वे मानसिक या शारीरिक रूप से स्वयं भाग लेते हैं जैसे कहानी सुनाना, ब्लॉक्स या गुटकों से आकार बनाना, बालू में खेलना आदि। इसलिए वे किसी एक क्रिया को लंबे समय तक नहीं कर सकते।
- सीखने के लिए उनमें स्वाभाविक जिज्ञासा एवं उत्सुकता होती है और वे नवीन वस्तुओं में रुचि लेते हैं।
- बड़े समूहों में क्रियाकलाप करने के वे आदी नहीं होते अत: छोटे समूहों के क्रियाकलाप में वे अधिक रुचि लेते हैं और उनसे लाभ भी उठाते हैं।
- वह अधिक समय तक चुपचाप नहीं बैठ सकते क्योंकि इस आयु में शारीरिक क्रिया और गतिशीलता की आवश्यकता होती है।
- वह वयस्कों तथा अन्य बच्चों के बारे में अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया सहज-स्वाभाविक ढंग से व्यक्त कर देते हैं।
- वह पुनरावृत्ति पसंद करते हैं, विशेष रूप से कहानियाँ और गीतों की पुनरावृत्ति।
- संगीत, लय तथा छंद के प्रति वे अपनी स्वाभाविक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

3–6 वय वर्ग के बच्चे बहुत सी बातों में एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

3–4 वय वर्ग	4–5 वय वर्ग	5–6 वय वर्ग
स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही माँसपेशियों पर खासतौर से अंगुलियों की माँसपेशियों पर ठीक से नियंत्रण नहीं होता।	अपनी शारीरिक क्रियाओं पर अधिक नियंत्रण होता है।	माँसपेशियों पर अच्छा नियंत्रण स्थापित हो जाता है। शारीरिक एवं गत्यात्मक क्रियाओं को बिना किसी की सहायता के कर पाते हैं।
कपड़े पहनने, व्यक्तिगत सफ़ाई और जूते पहनने आदि के लिए वयस्कों पर निर्भर रहता है।	अधिक आत्मनिर्भर हो जाता है।	काफ़ी आत्मनिर्भर हो जाते है और अपनी आवश्यतकता पूरी कर सकते हैं।
बड़ों से शारीरिक संपर्क की आवश्यकता होती है तथा उनका ध्यान आकर्षित करना चाहता है।	मित्रों में अधिक रुचि लेने लगता है। वह माँग करता है कि वयस्क लोग उससे और अधिक बातचीत करें।	मित्रों का साथ चाहते हैं और अब बड़ों का उतना ध्यान नहीं चाहते।
दूसरों का अनुसरण तथा नकल करने की सहज प्रवृत्ति होती है।	अधिक व्यक्तिपरक हो जाते हैं तथा अपनी बातें मनवाना चाहते हैं।	अपने व्यवहार में अधिक स्वतंत्र और अपने निश्चय में दृढ़ होने लगते हैं।
अकेले या किसी अन्य बच्चे के साथ खेलना पसंद करता है। दूसरों के साथ बाँटना या सहयोग करना नहीं चाहता।	अन्य बच्चों के साथ मिल-जुल कर खेलने में आनंद का अनुभव करते हैं दूसरों के साथ चीज़ें बाँटना तथा दूसरों की सहायता करना आरंभ कर देते हैं, परंतु अभी स्पर्द्धा का अर्थ नहीं समझते।	सामूहिक खेलों को अधिक सरलता से और नियमों को पालन करते हुए खेल सकते हैं तथा स्पर्द्धा का अर्थ समझते हैं और उससे प्रेरित होते हैं।
सक्रिय होता है किंतु आक्रामक नहीं।	शक्ति क्रियाशीलता तथा ऊर्जा से भरे रहते हैं। काफ़ी आक्रामक व्यवहार करते हैं।	सक्रिय, स्फ़ूर्तिवान और आक्रामक बना रहता है।
छोटे सरल वाक्यों को सीख सकता है तथा एक समय में एक या दो निर्देशों को समझ सकता है। शब्द भंडार सीमित होता है।	कुछ जटिल वाक्यों को समझने लगते हैं तथा एक समय में दो-तीन निर्देशों का पालन कर सकते हैं। अधिक प्रभावी ढंग से अभिव्यक्ति कर सकते हैं।	जटिल निर्देशों को समझ सकता है। शब्द भंडार में काफ़ी वृद्धि हो जाती है। अपने विचारों को और स्पष्टता से व्यक्त कर सकता है।
ध्यान केंद्रित करने की अवधि बहुत छोटी, लगभग 5–7 मिनट की होती है।	ध्यान केंद्रित करने की अवधि अपेक्षाकृत अधिक लंबी, लगभग 10–15 मिनट की हो जाती है किंतु यह ज़रूरी है कि उस क्रिया में उनकी रुचि हो।	किसी क्रिया को और अधिक समय तक बैठ कर कर सकता है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा क्या है?

- प्रारंभिक बाल शिक्षा, 3–6 वय वर्ग के उन बच्चों के लिए है जो विद्यालय से पूर्व की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक बाल केंद्रित कार्यक्रम हैं, जिसमें खेल तथा क्रियाविधि अपनायी जाती है।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम का केंद्र बिंदु बच्चों का सर्वांगीण विकास है।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम हैं जो बच्चों के लिए एक प्रेरणादायक खेल वातावरण तैयार करता है जिसमें उसका बौद्धिक, भाषायी, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शारीरिक विकास हो सके।

- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार करता है।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो पढ़ने-लिखने तथा गणित सीखने की तैयारी करने में मदद करता है।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो बच्चों को पर्यावरण के साथ अन्त: क्रिया करने, सामूहिक क्रियाकलाप में सहभागिता करने तथा समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करता हैं।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा इस बात पर बल देता है कि बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव दिये जाएँ जिससे उनमें सीखने की प्रक्रिया से संबंधित कौशलों का विकास हो सकें।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो पहले से योजना बनाने तथा कार्यक्रम तैयार करने पर बल देता है किंतु साथ ही बच्चों की आवश्यताओं को ध्यान में रखते हुए उसमें लचीलापन भी है।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों में आत्मनियंत्रण पैदा करता है जिसके फलस्वरूप उनमें आंतरिक अनुशासन बढ़ता है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा क्या नहीं है?

- प्रारंभिक बाल शिक्षा प्राथमिक शिक्षा का छोटा रूप बिलकुल नहीं हैं।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक पाठ्यक्रम आधारित (syllabus bound) कार्यक्रम नहीं है जिसके माध्यम से पढ़ना, लिखना और गणित सिखाया जाए।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा ऐसा कार्यक्रम नहीं है जिसमें पढ़ना-लिखना और गणित की शिक्षा औपचारिक रूप से दी जाए।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा ऐसा कार्यक्रम नहीं हैं जिसमें चुपचाप शिक्षक की बात सुनने अथवा रटने पर बल दिया जाए।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम भी नहीं है जिसका एक बंधा-बंधाया ढाँचा हो, जो अपरिवर्तनशील हो और जिसमें लचीलेपन का अभाव हो जिसे कक्षा, क्लास (पीरियड) तथा निश्चित समय सारणी को ध्यान में रखकर तैयार किया गया हो।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम नहीं है जिसमें बच्चों से बिना किसी विरोध के आज्ञापालन की अपेक्षा की जाती हो या जिसमें कठोर कक्षा अनुशासन का पालन किया जाता हो।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा में उपलब्धि नहीं है।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा एक परीक्षा उन्मुख कार्यक्रम नहीं है, जिसमें जो कुछ बच्चे सीखते हैं उसके अंतिम परिणाम पर बल दिया जाये।

प्रारंभिक बाल शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है?

प्रारंभिक बाल शिक्षा शिशु के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इसके निम्नलिखित कारण हैं —

- किसी शिशु के जीवनकाल में प्रथम छ: वर्ष निर्णायक होते हैं क्योंकि इस काल में विकास की गति जितनी तीव्र होती है उतनी अन्य किसी काल में नहीं होती।
- शिशु में निहित क्षमताओं के पूर्ण विकास के लिए एक प्रेरक वातावरण की ज़रूरत होती है। यह बात 3–6 वय वर्ग के लिए विशेषरूप से लागू होती है। प्रेरक वातावरण से तात्पर्य ऐसे वातावरण से है जो शिशु को—

- विविध प्रकार के अनुभवों, वस्तुओं तथा स्थानों से परिचित कराएँ तथा उनके साथ प्रयोग करने के अवसर दें।

- वयस्कों, समवयस्कों तथा अन्य लोगों के साथ अर्थपूर्ण तथा लाभकारी अन्त: क्रिया करने का अवसर दें।
- संवेगात्मक सुरक्षा तथा सहायक वातावरण दें।

कामकाज करने वाली माताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि होने के कारण, सम्मिलित परिवार की परंपरा टूटने से तथा वर्तमान जीवन शैली में शिशु के माता-पिता की व्यस्तता और तनाव में वृद्धि के कारण बच्चों को घर पर प्राय: उद्दीपक और प्रेरक वातावरण नहीं मिल पाता। अपवंचित वर्ग के बच्चों को विशेष रूप से इस दिशा में कोई सुविधा नहीं मिल पाती। पढ़े-लिखे न होने के कारण इस वर्ग के माता-पिता प्रभावी ढंग से बच्चों से अन्त: क्रिया नहीं कर पाते और उनके मानसिक विकास तथा भाषायी कौशलों के विकास में योगदान नहीं दे पाते। भौतिक सुख-सुविधाओं, जैसे खिलौने, पुस्तकें, खेल की सुविधा आदि के अभाव के कारण उन्हें और अधिक नुकसान होता यदि जीवन के प्रथम छ: वर्षों में कोई बच्चा इस प्रकार के सुविधा रहित वातावरण में पलता है तो इसका उसके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है, विशेष रूप से मानसिक तथा भाषा के विकास पर। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में ऐसे बच्चों की संख्या बहुत बड़ी है। इस संदर्भ में प्रारंभिक बाल शिक्षा का महत्व बहुत अधिक है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम बच्चों को संज्ञानात्मक, भाषा संबंधी, शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास के लिए प्रेरक अनुभव देता है। यदि इसे प्रभावी ढंग से चलाया जाये तो यह घर की अपवंचना की क्षतिपूर्ति कर सकता है और बच्चे के विकास की सुदृढ़ नींव तैयार कर सकता है जिससे आगे चलकर उसमें निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास हो सके।

प्राथमिक बाल शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में सहायक है। प्रारंभिक बाल शिक्षा बच्चों को विद्यालयी शिक्षा के लिए तैयार करती है तथा बच्चों में भाषायी और शारीरिक कौशलों का विकास करती है जो आगे चलकर प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने-लिखने तथा गणित सीखने में उनकी सहायता करता है। इससे बच्चों को अन्य क्षमताओं के विकास में भी सहायता मिलती है जैसे अन्य बच्चों के साथ समायोजना करने, एक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार चलने और एक निश्चित समय तक बैठकर किसी एक क्रिया पर ध्यान लगाने में। इससे उनके ध्यान केंद्रित करने की अवधि में भी विस्तार होता है। इन क्षमताओं और कौशलों से प्राथमिक विद्यालय के प्रारंभिक वर्षों में शिशु के समायोजना में सहायता मिलती है। इससे प्राथमिक स्तर पर ह्रास एवं अवरोध भी कम होता है।

छोटे बच्चों के पूर्व प्राथमिक केंद्र में आने से उनकी बड़ी बहनों को उनकी देख-रेख के लिए घर पर रूकना नहीं पड़ता और वे पढ़ने के लिए नियमित रूप से विद्यालय जा सकती हैं। अत: बालिका शिक्षा पर भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा का अप्रत्यक्ष रूप से अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्य

शिशु शिक्षा कार्यक्रम के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं –

- शिशु का उचित शारीरिक विकास, माँसपेशियों में अच्छा समन्वय तथा प्रमुख माँसपेशियों के कौशलों का विकास।

- शिशु में स्वस्थ आदतों का विकास और व्यक्तिगत समायोजना के लिए प्रमुख आवश्यक कौशलों का विकास जैसे कपड़े पहनना, भोजन करना, धोना, सफ़ाई आदि।
- वांछित सामाजिक दृष्टिकोण तथा शिष्टाचार का विकास ताकि क्रियाओं में शिशु सहभागिता कर सके तथा दूसरों के अधिकारी और विशेषाधिकारों के प्रति संवेदनशील बन सके।
- अपने विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करने, समझने, स्वीकार करने तथा नियंत्रित करने में शिशु की सहायता करके उसमें भावनात्मक परिपक्वता लाना।
- सौंदर्यबोध को प्रोत्साहित करना।
- शिशु में बौद्धिक जिज्ञासा जागृत करना तथा जिस संसार में वह रहता है उसे समझने में मदद करना। शिशु को भ्रमण, खोज़ तथा प्रयोग करने के अवसर देकर उसमें नवीन रुचियाँ जागृत करना।
- आत्माभिव्यक्ति के अवसर देकर शिशु में स्वतंत्रता तथा सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना।
- अपने विचारों और भावनाओं को प्रवाह, स्पष्टता एवं शुद्धता के साथ व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में क्या-क्या होना चाहिए?

प्रारंभिक बाल शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण शिशु का विकास करना है।

अत: प्रारंभिक बाल शिक्षा में निम्नलिखित के लिए क्रियाकलाप तथा अनुभव सम्मिलित होने चाहिए —

– शारीरिक विकास एवं माँसपेशियों का विकास
– संज्ञानात्मक विकास
– भाषा विकास
– सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास
– सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं सौंदर्यबोध विकास।

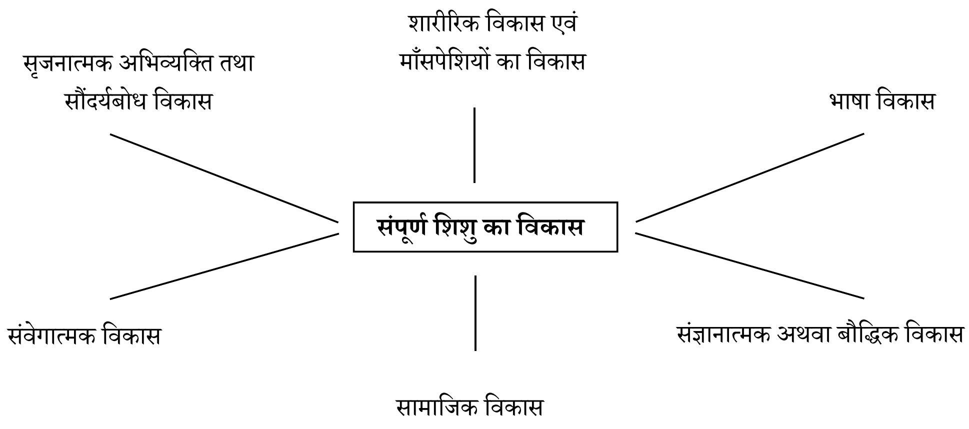

प्रारंभिक बाल शिक्षण विधि कैसी हो?

प्रारंभिक बाल शिक्षा निश्चित रूप से खेल विधि से दी जाने वाली शिक्षा है अर्थात् यह खेल और क्रिया पर आधारित शिक्षा है क्योंकि खेल विधि में व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों तथा क्षमताओं का ध्यान रखा जाता है। खेलना शिशु की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। खेल के माध्यम से बच्चे अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं साथ ही खेल के माध्यम से वे अपने आस-पास के संसार को देख और समझ सकते हैं। इससे बच्चों को सामाजिक संबंधों को स्थाापित करने में भी सहायता मिलती है। इस प्रकार शिशु में सभी पक्षों के विकास में सहायक होने के कारण खेलों का महत्व बहुत अधिक है। प्रारंभिक बाल शिक्षा देने के ये प्रभावी साधन हैं। खेल की स्थितियों के माध्यम से बच्चों को ठोस अधिगम अनुभव प्राप्त होते हैं। संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया में बच्चा एक निष्क्रय प्राप्तकर्ता मात्र न रह कर स्वयं सक्रिय रूप से सीखने की क्रिया में भाग लेता है। यह एक संतुलित क्रिया प्रधान कार्यक्रम सामने रखता है जिससे समस्त विकासात्मक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। खेल बच्चों की अधिगम प्रक्रियाओं जैसे निरीक्षण, प्रयोग, समस्या समाधान तथा सृजनात्मकता के विकास का पोषण करता है साथ ही उनकी शरीरिक, भाषायी और सामाजिक दक्षताओं में भी वृद्धि होती है। बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जा सकता है तथा प्रत्येक बच्चे का सतत और समग्र मूल्यांकन किया जा सकता है। सामूहिक तथा एकांकी खेलों के माध्यम से शिक्षिका/कार्यकर्मी को हर बच्चे की प्रगति का अंदाजा लग सकता है। खेल विधि द्वारा बच्चों को सीखने में आनंद की अनुभूति होती है। अत: खेल बच्चों के लिए विद्यालय तथा विद्यालयी शिक्षा के प्रति उत्प्रेरक का कार्य करते हैं।

प्रारंभिक बाल शिक्षा की कक्षा व्यवस्था एवं प्रबंध कैसा हो?

प्रारंभिक बाल कक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें खेल विधि का प्रयोग आसानी से हो सके। अतएव कक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए कि छोटे और बड़े समूहों में की जाने वाली क्रियाओं के लिए पर्याप्त स्थाान हो। सबसे अच्छा तो यह होगा कि इसमें एक बड़ा पक्का मैदान हो जहाँ बच्चे बड़े और छोटे समूहों में बैठकर विभिन्न क्रियाओं में भाग ले सकें। एक कोने में छोटी मेज और कुर्सियाँ लगी हों जहाँ वे बैठकर व्यक्तिगत क्रियाएँ जैसे चित्रकला, रंग भरना, क्रेयान से काम करना तथा पहेलियाँ आदि क्रियाएँ कर सकें। कक्षा में बच्चों के बनाये हुए सामान तथा प्रोजेक्टर संबंधी चित्रों, चार्ट आदि के प्रदर्शन के लिए भी स्थान होना चाहिए। प्रदर्शन सामग्री बहुत ऊँचाई पर न हो, वह सिर्फ़ इतनी ऊँचाई पर हो कि बच्चों की दृष्टि उस पर आसानी से पड़ती रहे। यदि कक्षा बड़ी हो और सामग्री खरीद या बना सकते हों तो कक्षा में विशिष्ट क्रियाओं के लिए अलग-अलग स्थान निर्धारित हो सकता है जैसे – गुड़ियाघर जिसमें गुड़िया का सामान, कठपुतलियाँ तथा कल्पनाशील खेलों के लिए सामग्री आदि हो; ब्लॉक या गुटकों का कोना हो जिसमें ऐसी निर्माण सामग्री हो जिन्हें तोड़ा जा सके; सचित्र पुस्तकों का कोना हो सकता है जिसमें

चित्र पुस्तकों को रखा या टाँगा जा सके और बच्चे पुस्तकों का चुनाव स्वयं कर सकें तथा उनका प्रयोग और रखरखाव किया जा सके; विज्ञान का कोना हो सकता है जहाँ सरल प्रयोग तथा निरीक्षण आदि की व्यवस्था हो; कलात्मक एवं रचनात्मक कार्य के लिए स्थान हो; बच्चों का टिफ़िन और पानी की बोतल रखने का निश्चित स्थान होना चाहिए; यदि हो सके तो छोटा बोर्ड हो और उसे इस प्रकार रखा जाए कि बच्चे उस पर चित्र बना सकें और रेखाएँ आदि खींच सकें। कक्षा में ऐसा स्थान अवश्य होना चाहिए जहाँ खेल सामग्री का ढेर लगाया जा सके ताकि बच्चे स्वतंत्र खेलों के लिए सामग्री उठा सकें और खेलने के बाद उसे वापस यथास्थान पर रख सकें। सामग्री के चुनाव के संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों की सुरक्षा, बच्चों की रुचि, आयु तथा सीखने की क्षमता की दृष्टि से खेल सामग्री की उपयुक्तता, गुणवत्ता और टिकाऊपन, विविध प्रयोग की क्षमता इत्यादि का ध्यान रखना चाहिए।

प्रारंभिक बाल शिक्षा हेतु उपकरण एवं सामग्री-सुझाव

कक्षा के बाहर के उपकरण

बाजार में बिकने वाले अथवा पर्यावरण में उपलब्ध वस्तुओं से बनाये उपकरण जिनसे चढ़ने, कूदने, संतुलन बनाये रखने, झूलने, लटकने, साइकिल चलाने आदि के अनुभव प्राप्त किए जा सकें। छोटी-बड़ी गेंद, पुराने टायर, रिंग आदि जैसे उपकरण जिनसे फेंकने, लुढ़काने, पकड़ने, पाँव से मारने आदि के अनुभव प्राप्त किए जा सकें। बालू, बालू से खेलने के लिए विभिन्न प्रकार के पुराने पात्र आदि हों जैसे प्लास्टिक की छलनी, प्लास्टिक के पुराने मग, पुराने प्याले आदि।

कक्षा के अंदर के उपकरण

खिलौने, मनके, तार, पत्तियों, टहनियाँ, कंकड़, मिट्टी/बालू तथा अन्य ऐसी वस्तुएँ जिन्हें बच्चा तरह-तरह के रूप दे सके। निर्माण के खेल के लिए सामग्री जैसे लकड़ी और प्लास्टिक के गुटके (ब्लॉक्स)। कल्पनाशील/प्रतीकात्मक खेलों के लिए खेल सामग्री जैसे गुड़िया, डॉक्टर का सेट, पुरानी पोशाकें, खिलौने के बर्तन, पुराने चश्मे के फ्रेम, बटुए, पुराने जूते, खिलौने की मोटरें, खिलौने के स्कूटर, खिलौने के हवाई जहाज़ आदि को शामिल किया जा सकता है।

भाषा और संज्ञानात्मक क्रियाओं आदि के लिए शिक्षिका द्वारा बनाई गई सामग्री जैसे डोमिनोज (रंगों, बिंदुओं, संख्याओं, तस्वीरों आदि के), फ़्लैश कार्ड्स, चित्रों के कार्ड्स, छाँटने, वर्गीकरण करने, नमूने बनाने आदि के लिए कट आउट्स। वार्तालाप के लिए चार्ट्स और तस्वीरें, कठपुतलियाँ (छड़ पुतलियाँ, उंगलियों से खेलने वाली तथा दस्ता ने से बनाई गई कठपुतलियाँ), फ़्लैनल ग्रॉफ़, पज़ल्स, बनायी गयी तराजू, घड़ी आदि; प्रोजेक्ट से संबंधित प्रदर्शन एवं क्रिया सामग्री, वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए बनायी गयी सामग्री, गीतों एवं कहानियों का संकलन, इत्यादि।

अतिरिक्त वस्तुएँ/कच्चा माल, कागज़, मिट्टी, पेंट/रंग, रंगने के लिए ब्रश, क्रेयान, गोंद, कैंची आदि। व्यर्थ की वस्तुएँ जैसे डिब्बे, शीशियाँ, ढक्कन, थर्मोकोल, कपड़े के टुकड़े एवं कतरने, अखबार तथा मासिक पत्रिकाएँ आदि।

प्रारंभिक बाल शिक्षण विधि नियोजन एवं क्रियान्वयन कैसे करें?

प्रारंभिक बाल शिक्षण विधि अर्थात् खेल विधि में निम्नलिखित प्रकार की क्रियाएँ समिलित की जाती हैं – स्वतंत्र एवं निर्देशित वार्तालाप, कहानी सुनाना और बनाना, अभिनय, तुकबंदियाँ और गीत, गोले में सामूहिक खेल एवं क्रियाएँ, खेल सामग्री के साथ निर्देशित संज्ञानात्माक एवं भाषा संबंधी क्रियाएँ, प्रकृति में विचरण, बालू के खेल, पानी के खेल, कठपुतली, संगीत एवं लयात्मक क्रियाएँ, कक्षा के अंदर के स्वतंत्र खेल पहेलियाँ, मोतियों, गुटकों, आदि के साथ, कक्षा के बाहर के खेल, भ्रमण।

खेल विधि के प्रयोग के लिए नियोजन बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक बाल शिक्षा के उद्देश्यों एवं क्रियाओं का नियोजन लंबी एवं छोटी, दोनों अवधि के लिए किया जाना चाहिए। लंबी अवधि के लिए नियोजन से तात्पर्य पूरे वर्ष के लिए योजना बनाने से है। थोड़े समय के लिए नियोजन का अर्थ साप्ताहिक योजना तैयार करने से है, जिसमें प्रत्येक दिन की क्रियाओं और उनके उद्देश्यों का विवरण हो। पूरे वर्ष की योजना शैक्षिक सत्र के आरंभ में ही तैयार कर ली जानी चाहिए। जबकि साप्ताहिक योजना नियमित रूप से सप्ताह के अंतिम दिन तैयार की जा सकती है।

प्रत्येक दिन के कार्यक्रम की योजना इस प्रकार तैयार करनी चाहिए कि निम्नलिखित में संतुलन हो– व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्रियाएँ; कक्षा के बाहर की और कक्षा के अंदर की क्रियाएँ; सक्रिय एवं शांत क्रियाएँ; स्वतंत्र एवं निर्देशित क्रियाएँ; विकास के सभी पक्षों का पोषण करने वाली क्रियाएँ।

प्रत्येक दिन के कार्यक्रम का विवरण दैनंदिनी में होना चाहिए तथा सप्ताह के लिए निर्धारित उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया जाना चाहिए और आने वाले सप्ताह का कार्यक्रम इसी मूल्यांकन के आधार पर तैयार किया जाना चाहिए।

सत्र के लिए निर्धारित प्रोजेक्ट के आधार पर साप्ताहिक योजना के लिए विषय चुने जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में जहाँ तक हो सके एक सप्ताह के लिए क्रियाओं का नियोजन निर्धारित विषय पर ही आधारित होना चाहिए।

यद्यपि नियोजन आवश्यक है, किंतु प्रारंभिक बाल शिक्षण में लचीलापन होना चाहिए ताकि तात्कालिक आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन किया जा सके। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षिका ने "हवा" विषय पर क्रियाकलाप की योजना बनायी है और बच्चे कहानी सुनने की माँग करते हैं तो शिक्षिका को अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना को नया रूप दे देना चाहिए।

खेल विधि की प्रमुख विशेषता यह है कि छोटे और बड़े समूह में की जाने वाली क्रियाओं को बारी-बारी से करवाया जा सकता है। बहुत-सी क्रियाएँ जैसे कहानी सुनाना, कठपुतली का खेल आदि बड़े समूह में करवायी जा सकती हैं पर कुछ क्रियाएँ जैसे स्वतंत्र खेल सृजनात्मक या निर्देशित संज्ञानात्मक क्रियाओं को छोटे समूह में करवाना चाहिए। जहाँ केवल एक वयस्क उपलब्ध हो वहाँ छोटे समूहों के क्रिया कराने के लिए बच्चों को छोटे-छोटे 3–4 समूहों में बाँटने की तकनीक अपनानी चाहिए। एक समूह में

ऐसी क्रिया करवायी जाए जिसमें शिक्षिका के मार्गदर्शन की आवश्यकता हो जैसे भाषा या अंकों से संबंधित निर्देशित क्रिया और अन्य समूह उसी समय में ऐसी क्रियाएँ कर सकते हैं जो वे बिना किसी की सहायता या मार्गदर्शन के कर सकें जैसे स्वतंत्र खेल, पज़ल्स सृजनात्मक क्रियाएँ आदि। समूहों को बारी-बारी से दूसरी क्रियाएँ करने का अवसर दिया जा सकता है, ताकि उन्हें सभी क्रियाओं का अनुभव प्राप्त हो सके।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम का नियोजन बच्चों की आयु तथा उनके विकास के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। यदि प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यकर्ता को एक समय में 3–6 वय वर्ग के बच्चों को एक साथ लेना पड़े तो उन्हें वय वर्गानुसार बाँटा जा सकता है। विशेष रूप से लिखने-पढ़ने की तैयारी तथा संज्ञानात्मक क्रियाओं के लिए कहानी सुनाना, गीत, कठपुतली के खेल, वार्तालाप आदि क्रियाएँ बड़े समूह में करवायी जा सकती हैं। विभिन्न वय वर्ग के बच्चों को मिलाकर भी समूह बनाये जा सकते हैं। ऐसे समूह बनवाकर सक्षम बच्चों से अन्य बच्चों की मदद करवायी जा सकती है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा का नियोजन तथा क्रियाओं का आयोजन करते समय इस क्रम से आगे बढ़ें मूर्त से अमूर्त की ओर, परिचित से अपरिचित की ओर, सरल से कठिन की ओर, यथासंभव क्रियाओं का नियोजन एवं क्रियान्वयन में जीवन के वास्तविक अनुभवों को शामिल करें, वास्तविक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुओं जैसे खिलौनों, गुटकों (ब्लॉक्स) आदि को छूकर, तोड़-मोड़ कर प्राप्त किए जाने वाले अनुभव प्रदान करें, जीवन के वास्तविक अनुभवों पर आधारित तस्वीरों तथा वस्तुओं के चित्र दिखाएँ फिर प्रतीकात्मक तथा अमूर्त वस्तुओं जैसे अक्षरों और शब्दों साथ कार्य करवाएँ।

प्रारंभिक बाल शिक्षा के दैनिक कार्यक्रम का एक नमूना इस प्रकार का हो सकता है।

चार घंटे का कार्यक्रम (4 से 5 साल के बच्चों के लिए)	
9.00–9.10 a.m.	बच्चों का स्वागत एवं उनकी स्वच्छता की जाँच
9.10–9.40 a.m.	प्रार्थना
9.40–10.10 a.m.	स्वतंत्र वार्तालाप
10.10–10.40 a.m.	संज्ञानात्मक/भाषा संबंधी क्रियाएँ
10.40–11.10 a.m.	कक्षा के बाहर के खेल
11.10–11.40 a.m.	हाथ धोना, नाश्ता तथा आराम
11.40–12.10 p.m.	कक्षा के अंदर के स्वतंत्र खेल (छोटे समूह में) तथा एक
12.10–12.30 p.m.	किसी प्रोजेक्ट पर निर्देशित वार्तालाप
12.30–12.50 p.m.	कहानी तथा गीत/ अभिनय/ लयात्मक क्रियाएँ
12.50–1.00 p.m.	विदाई

तीन घंटे का कार्यक्रम (3 से 4 साल के बच्चों के लिए)	
9.00–9.20 a.m.	स्वागत, सफ़ाई, जाँच, प्रार्थना
9.20–9.30 a.m.	स्वतंत्र वार्तालाप
9.30–9.50 a.m.	बड़े समूह में संज्ञानात्मक क्रिया
9.50–10.10 a.m.	कक्षा के अंदर के स्वतंत्र खेल-छोटे समूह में
10.10–10.25 a.m.	कक्षा के बाहर के खेल
10.25–10.55 a.m.	हाथ धोना, नाश्ता तथा आराम
10.55–11.20 a.m.	सृजनात्माक क्रियाएँ
11.20–11.35 a.m.	बड़े समूह में भाषा संबंधी क्रिया
11.35–11.55 a.m.	कहानी एवं गीत/ अभिनय या लयात्मक क्रिया
11.55–12.00 a.m.	विदाई

कैसे करें मूल्यांकन?

प्रारंभिक बाल शाला पाठ्यक्रम केंद्रित न होकर "विकासोन्मुख" है अत: विकासात्मक उद्देश्यों के संदर्भ में शिशु का सतत अनौपचारिक मूल्यांकन करते रहना अत्यंत आवश्यक है। शिशु का मूल्यांकन व्यक्तिगत होना चाहिए तथा विकास के हर पक्ष का मूल्यांकन होना चाहिए जैसे सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक, संज्ञानात्मक और भाषा का विकास। सतत मूल्यांकन मुख्य रूप से शिशु के व्यवहार तथा विभिन्न खेल क्रियाओं के समय उसके प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करके होना चाहिए, जैसे पहेलियों, निर्देशित भाषायी एवं संज्ञानात्मक क्रियाओं, खेलों आदि के द्वारा। साढ़े चार से छ: वर्ष के बच्चों के लिए अभ्यास शीट भी तैयार की जा सकती है।

सतत मूल्यांकन के अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में भी बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए। प्रत्येक सत्र के प्रगति पत्र को अभिभावकों को दिखाकर उनसे शिशु के संबंध में परामर्श होना चाहिए।

प्रत्येक सत्र का मूल्यांकन निर्धारित उद्देश्यों तथा उनकी पूर्ति के लिए किए गए कार्यक्रमों पर आधारित होना चाहिए। सतत मूल्यांकन द्वारा उन बच्चों का पता लगाना चाहिए जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ हों। आवश्यकतानुसार बच्चों को छोटे समूहों में बाँटकर कुछ बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। छोटे समूह की क्रियाओं में उन बच्चों को अपनी गति से सीखने और प्रगति करने का अवसर मिलता है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही शिक्षिका को उनके लिए क्रियाओं की योजना बनानी चाहिए।

माता–पिता के साथ कार्य

प्रारंभिक बाल शिक्षा की पहली प्राथमिकता यदि शिशु है तो उसकी प्राथमिकता उसके माता-पिता हैं। शिशु के विकास में उनका दायित्व बराबर बना रहता है। अत: शिक्षिका तथा माता-पिता को मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि बच्चा सीख सके और आगे बढ़ सके।

प्रारंभिक बाल शिक्षा में माता-पिता के साथ काम करने के दो पक्ष हैं – माता-पिता की सहभागिता एवं उनकी शिक्षा। माता-पिता की सहभागिता से अभिप्राय यह है प्रारंभिक बाल शिक्षा के नियोजन एवं क्रियान्वायन में वे आगे बढ़कर शिक्षिका की सहायता करें। माता-पिता की शिक्षा से तात्पर्य उन्हें आवश्यक ज्ञान और कौशल देने से है, ताकि वे शिशु के अभिभावक के रूप में अधिक सफल और प्रभावी सिद्ध हों।

ये दोनों पक्ष अलग होते हुए भी एक-दूसरे के पूरक हैं। शिक्षिका माता-पिता की सहभागिता को कई रूपों में प्राप्त कर सकती है। उदाहरण के लिए,

– कहानी सुनाना, सृजनात्मक क्रियाएँ अथवा जब बच्चे भ्रमण के लिए ले जाये जाएँ तो उनके साथ जाकर छोटे-छोटे समूह में की जाने वाली क्रियाओं में वे अतिरिक्त वयस्क के रूप में सहायता कर सकते हैं।
– जब प्रारंभिक बाल शिक्षिका किसी अन्य कार्य में व्यस्त हो तो वे उसका स्थान ले सकते हैं।
– प्रारंभिक बाल केंद्र के लिए सामग्री और कच्चा माल जुटाने में वे उसकी सहायता कर सकते हैं।
– जिन अभिभावकों के कोई विशेष कौशल या

प्रतिभा हो तो उनका उपयोग बच्चों के लाभ के लिए कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, बढ़ई का काम करने वालों से लकड़ी के खिलौने, गुटके आदि बनाने का अनुरोध किया जा सकता है, जो माताएँ अच्छा गाती हों वे बच्चों को गाना सिखा सकती हैं। जो लोग रंगाई का काम करते हों वे अलमारी, किवाड़ आदि रंग सकते हैं।

सहयोग देने की प्रक्रिया में ही अभिभावक लोग प्रारंभिक बाल शिक्षा के सिद्धांतों एवं क्रियाकलापों से परिचित हो सकते हैं। प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र में जो कुछ सिखाया जाता है उसके सबलीकरण के लिए भी माता-पिता की शिक्षा आवश्यक है। माता-पिता को उनके शिशु की प्रगति की सूचना बराबर मिलती रहनी चाहिए। इसके अलावा उन्हें निम्नलिखित बातों की बुनियादी जानकारी दी जानी चाहिए –

– शिशु की देखभाल अर्थात् उसका स्वास्थ्य एवं पोषण
– खेलों का महत्व तथा शिशु के विकास के लिए बाल उद्दीपन
– प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में खेल विधि, उसकी आवश्यकता एवं उद्देश्य
– बाल विकास में माता-पिता की भूमिका।

माता-पिता को कविता पाठ, कहानी सुनाना, कठपुतली बनाने की सरल विधियाँ सिखायी जा सकती हैं जिससे उनके और बच्चे के पारस्पारिक संबंधों की गुणवत्ता में भी सुधार आ सकता है। निम्नलिखित क्रियाकलाप के माध्यम से माता-पिता और शिक्षिका के बीच अच्छा संपर्क बना रह सकता है –

– अचानक होने वाली मुलाकातें उदाहरण के लिए, जब अभिभावक बच्चे को छोड़ने या लेने आएँ।
– अभिभावक और शिक्षिका के बीच पहले से तय की गई बैठकें जो सुविधानुसार हर महीने या हर तीन महीने में की जा सकती है।
– बाल मेले का आयोजन जिसे वर्ष में एक बार आयोजित कर बच्चों के परिवार के सदस्यों को आमंत्रित किया जा सकता है।
– यदि अभिभावक पढ़े-लिखे और समझदार हों तो एक समाचार पत्र भी निकाला जा सकता है।

संदर्भ सूची

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

कौल, विनीता और रोमिला सोनी. 1997. *आपकी आँगनवाड़ी आपके सवाल. पूर्व प्राथमिक शिक्षा.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

कौल, विनीता और सुषमा सिंह. 1996. *प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा.* एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली.

भारत सरकार. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* (संशोधित संस्करण). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

मुरलीधरन, आर. 1991. *शिशु उद्दीपन के लिए प्रेरक क्रियाएँ.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

सोनी, रोमिला, राजेन्द्र कपूर और कृष्णकांत वशिष्ठ. 2003. *पूर्व प्राथमिक शिक्षा – एक परिचय.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.